

नवग्रह चालिसा

श्री गणपति गुरुपद कमल, प्रेम सहति शशिनाया । नवग्रह चालीसा कहत, शारद होत सहाय
जय जय रवि शशि सोम बुध, जय गुरु भ्रगु शनि राज
जयति राहू अरु केतु ग्रह, करहु अनुग्रह आज

प्रथमही रविकहं नावौ माथा, करहु कृपा जन जानी अनाथा
हे आदित्य दवाकर भानु, मै मतमिन्द महा अग्यानु
अब नजि जन कहं हरहु कलेशा, दनिकर द्वादशा रूपा दनिषा
नमो भास्कर सूर्य प्रभाकर, अर्क मतिर अघ मोघ कषममाकर
शशामियंकर रजनपति स्वामी, चंद्र कलानधि नमो नमामि
राकापति हिमिशु राकेशा, प्रनवत जन तना हरहु कलेशा
सोम इंद्रु वधि शान्ति सुधाकर, शीत रश्मि औषधि निशाकर
तुम्ही शोभति सुंदर भाल महेशा, शरण शरण जन हरहु कलेशा
जय जय मंगल सुखा दाता, लौहति भौमादिका वखियाता
अंगारक कुंज रुज ऋणहारि, दया करहु यही वनिय हमारी
हे महसित छातसित सुखरासी, लोहतिंगा जय जन अघनासी
अगम अमंगल अब हर लीजै, सकल मनोरथ पूरन कीजै
जय शशानंदन बुध महाराजा, करहु सकल जन कहाँ शुभ काजा
दीजै बुद्धा सुमति सुजाना, कठनि कष्ट हरी करी कलयिना
हे तारासुत रोहणी नंदन, चंद्र सुवन दुहख दवंद नकिन्दन
पूजहु आस दास कहूँ स्वामी प्रणत पाल प्रभु नमो नमामि
जयति जयति जय श्री गुरु देवा, करहु सदा तुम्हारी प्रभु सेवा
देवाचार्य तुम गुरु ज्ञानी, इन्द्र पुरोहति वदिया दानी
वाचस्पति बागीसा उदारा, जीव भ्रुहस्पति नाम तुम्हारा
वदिया सन्धि अंगीरा नामा, करहु सकल वधि पूरण कामा
शुक्रदेव तल जल जाता, दास नरितर ध्यान लगाता
हे उशाना भारगव भृगुनंदन, दैत्य पुरोहति दुष्ट नकिन्दन
भ्रगुकुल भूषण दुसना हारी, हरहु नैष्ट ग्रह करहु सुखारी
तुही दवजिवर जोशी सरिताजा, नर शरीर के तुम्ही राजा
जय श्री शनि देव रवनिंदन, जय कृष्णो सौरी जगवन्दन
पगिल मन्द रौद्र यम नामा, वप्र आदिकोणस्थ ललामा
वकर दृष्टी पपिलन तन साजा, कषण मह करता रंक कषण राजा
ललत स्वर्ण पद करत नहिला, हरहु वपित छाया में लाला
जय जय राहू गगन प्रवसैया, तुम्ही चंद्र आदित्य ग्रसईया
रवि शशि अरी सर्वभानु धारा, शखी आदि बहु नाम तुम्हारा
सैहकैय तुम नशाचर राजा, अर्धकार्य जग राखहु लाजा
यदि ग्रह समय पाय कहीं आवहु, सदा शान्ति और सुखा उपजवाहु
जय श्री केतु कठनि दुखहारी, करहु सृजन हति मंगलकारी
ध्वजयुक्त रुण्द रूप वकिराला, घोर रौद्रतन अधमन काला
शखी तारिका ग्रह बलवाना, महा प्रताप न तेज ठकाना
वहन मनि महा शुभकारी, दीजै शान्ति दया उर धारी
तीरथराज प्रयाग सुपासा, बसे राम के सुंदर दासा
ककरा ग्रामही पूरे-तविारी, दुर्वासाश्रम जन कष्ट उतरना सेतु
नवा-ग्रह शान्ति लिखियो सुखा हेतु, जन तन कष्ट उतारण सेतु
जो नति पाठ करै चति लावे, सब सुख भोगी परम पद पावे

धन्य नवग्रह नवग्रह देव प्रभु, महिमा अगम अपार
चीत नव मंगल मोद गृह, जगत जनन सुखद्वारा
यह चालीसा नावोग्रह वरिचति सुन्दरदास
पढत प्रेमयुक्त बढत सुख, सर्वानन्द हुलास